क्या दंगाई देश का प्रधानमंत्री बनेगा ?

मनोज कुमार झा

भारतीय जनता पार्टी में लालकृष्ण आडवाणी को पूरी तरह दरकिनार कर दिया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेतृत्व ने मोदी को भाजपा का चेहरा घोषित कर दिया है। राजनाथ सिंह महज कहने को भाजपा अध्यक्ष हैं, असली ताकत मोदी के हाथ में है। उन्होंने खुद को हिंदू राष्ट्रवादी घोषित कर दिया है। स्पष्ट है, भाजपा लोकसभा चुनाव हिंदुत्व के नाम पर लड़ेगी। उसके हिंदुत्व का चरित्र अत्यंत ही क्रूर, घटिया और इतिहास विरोधी है,जो इस देश में चल नहीं सकता। कभी नहीं चला। चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने भी अपने समय के सबसे प्रगतिशील धर्म-दर्शन बुद्धिज़्म को अपनाया था। और चंद्रगुप्त मौर्य जैन धर्म का अनुयायी बना था। अशोक के उत्तराधिकारी जब हिंदू धर्म की पुनर्स्थापना में लगे तो उनका पतन हो गया।

वर्णाश्रम पर आधारित, जाति-पात, छुआछूत और विधवा औरतों को जिंदा आग में झोंक देने वाले हिंदू धर्म का सहारा लेकर आज 21 वीं सदी में कोई राजनीतिक पार्टी अगर देश की सत्ता हथियाने का इरादा रखती है तो उसके नेतृत्व के मानसिक-वैचारिक दिवालिएपन की हद को समझना कठिन नहीं है। उग्र हिंदूवाद को हवा देकर भाजपा देश की सत्ता पर कब्जा करेगी, यह संघ की खामख्याली के सिवा और कुछ नहीं है। देश के लुटेरे पूंजीपतियों के धन पर पलने वाले संघ के नेताओं की यह सोच उनकी मूर्खता को ही दर्शाती है।

उग्र हिंदुवाद की विचारधारा के आधार पर संघ लंबे समय से देश की सत्ता पर काबिज़ होने का दिवा-स्वप्न देखता रहा है, पर इसमें उसे कभी सफलता नहीं मिली और न ही भविष्य में मिलेगी। लेकिन अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये संघ ने न जाने कितने दंगे प्रायोजित करवाए और हज़ारों-हज़ार निरीह लोगों का क़त्लेआम करवाया और आज गुजरात दंगों को प्रायोजित करने वाला हत्यारा मोदी प्रधानमंत्री पद का दावेदार बना घूम रहा है। हज़ारों-हज़ार लोगों की हत्या का ज़िम्मेवार मोदी, जिसकी जगह जेल में होनी चाहिए थी, खुलेआम देश में घृणा का प्रचार कर रहा

है और देश की न्याय व्यवस्था इतनी नपुंसक है कि इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती।

जितने पाखंडी और धर्म के नाम पर लूट मचाने वाले हैं, मोदी के साथ हैं। देश के मध्यवर्ग का बड़ा हिस्सा जो तथाकथित विकास के फल हड़प कर मोटा होता जा रहा है, मोदी के साथ है। तमाम पोंगेपंथी मोदी के साथ हैं। पूंजीपतियों का टुकड़खोर मीडिया का एक बड़ा हिस्सा मोदी के साथ है। मोदी के पक्ष में हवा बनाने के लिए संघ और बीजेपी मीडिया मैनेजमेंट की रणनीति बनाने में लगी है।

मुंबई में शिवसेना के साथ हाथ मिलाकर मोदी ने खुलेआम 'आमची हिंदूराष्ट्र' का नारा बुलंद किया है, पर भूल गए कि इसी शिवसेना ने एक समय गुजरातियों को मुंबई से खदेड़कर भगाया था। शिवसेना का नया लीडर उद्धव ठाकरे भी मोदी को समर्थन देने के एवज में जमकर सौदेबाजी करेगा। इधर, योग की झांसपट्टी देकर जनता को जमकर बेवकूफ बनाने वाला और अरबों की संपत्ति जोड़ चुका व्यापारी रामदेव भी मोदी का समर्थन कर रहा है। पर धन के इस पुजारी योगी के चरित्र की असलियत तो तभी सामने आ गई थी, जब दिल्ली के रामलीला मैदान से औरतों के कपड़े पहन पुलिस की पकड़ में आने के भय से भाग निकला था। इसके कहने से जनता मोदी को वोट देने वाली नहीं।

इधर, सत्तालोलुप बीजेपी अध्यक्ष मोदी के पक्ष में माहौल बनाने के लिये अमेरिका गया है। इसकी वजह यह है कि गुजरात दंगों के अपराधी मोदी को अमेरिका आज तक अपनी ज़मीन पर कदम रखने की इजाजत देने को तैयार नहीं है। मोदी को शायद महसूस हो गया है कि प्रधानमंत्री वह तभी बन सकता है, जब यूपी और बिहार में बीजेपी को आशानुरूप सीटें मिलें। नीतीश कुमार ने बहुत पहले ही यह समझ लिया था कि मुसलमानों के कट्टर दुश्मन मोदी का वह समर्थन करते हैं तो उनकी अपनी कुर्सी भी डांवाडोल हो सकती है, क्योंकि वे जातिवादी समीकरण, अपराधियों से गठजोड़ और मुसलमानों के समर्थन से सरकार चला रहे हैं। यही कारण है कि जैसे ही यह स्पष्ट हो गया कि बीजेपी में मोदी का वर्चस्व स्थापित हो गया है और उसे प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाएगा, उन्होंने तुरंत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से नाता तोड़ लिया।

वैसे आडवाणी के नेतृत्व में भी बीजेपी सांप्रदायिक ही थी, पर प्रत्यक्ष रूप से दंगे भड़काने में आडवाणी की कभी कोई भूमिका नहीं रही, जबकि मोदी ने राज्य के शासनतंत्र का सहारा लेकर ठीक उसी तरह दंगे करवाए और मुसलमानों का क़त्लेआम कराया, जैसा सन् 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेसी नेताओं ने सिखों का क़त्लेआम कराया था। सिखों के क़त्लेआम के आरोपी भी खुले घूम रहे हैं और मोदी तो प्रधानमंत्री बनने के दावे कर रहा है। स्पष्ट है कि भारतीय न्यायतंत्र किस कदर पंगु है, अन्यथा ये मानव द्रोही सींखचों के पीछे होते।

बिहार और यूपी में भाजपा की हालत पतली है। नीतीश कुमार की सरकार भाजपा के बिना भी चल रही है और चलती रहेगी। नीतीश को चुनौती देने के लिये मोदी ने एलान किया है कि वे नालंदा जा कर भाजपा की संजीवनी प्रदान करेंगे। नालंदा नीतीश का गढ़ है और जिला मुख्यालय बिहार शरीफ मुस्लिम बहुल क्षेत्र होने के साथ ही दंगा संवेदनशील क्षेत्र भी है। वहां जाने पर कहीं लोग मोदी का मुंह काला न कर दें, और फ़साद उत्पन्न न हो जाए, यह नीतीश सरकार और क़ानून-व्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

जहां तक यूपी का सवाल है, सपा-बसपा मुख्य प्रतिद्वंद्वी पार्टियां हैं, कांग्रेस और भाजपा की अब वहां एक नहीं चल सकती। लाख कोशिश कर बीजेपी वहां राम मंदिर मुद्दे को फिर से जिंदा नहीं कर सकती। पश्चिम बंगाल में भाजपा का कोई वजूद नहीं। यही हाल अन्य राज्यों में है। मोदी की कोशिश है कि कर्नाटक में भ्रष्ट येदियुप्पा को फ़िर अपने साथ जोड़ें। येदियुरप्पा अगर जुड़ भी गए तो किसी काम के नहीं होंगे।

दूसरी तरफ, भाजपा में भी मोदी की सर्वस्वीकार्यता संदिग्ध है। कई तो खुले तौर पर मोदी के खिलाफ़ हैं तो कई पीठ पीछे साज़िश में लगे हैं। इनमें बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री प्रमुख हैं जो स्वयं प्रधानमंत्री बनने का हसीन ख़्वाब देख रहे हैं। इन स्थितियों में मोदी अपनी कट्टर छवि से सबको क़ायल करना चाहते हैं। 'विकास' को मुद्दा बनाने की बात करने वाला संघ के इशारे पर 'हिंदुत्व' का नकाब लगाकर सामने आ रहा है। 'दंगा-आयोजन' में इसकी विशेषता को संघ ने अच्छी तरह परख लिया है।

इस बात की पूरी आशंका है कि सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को तेज करने के लिए और वोटों की फसल काटने के लिये संघ सुनियोजित रूप से कहीं दंगे न भड़काना शुरू कर दे, क्योंकि केंद्र सरकार पूरी तरह जनविरोधी एवं नपुंसक है। पूरे देश में अराजक माहौल बनता जा रहा है। इसलिए लोगों को सावधान रहने की जरूरत है। जहां तक हिंदुत्व और हिंदू राष्ट्र का सवाल है, यह बेतुका है। यह देश किसी एक कौम का नहीं, न रहा है। इतिहास गवाह है।

जनता के शायर अदम गोंडवी के शब्दों में-

हिंदू या मुस्लिम के अहसासात को
मत छेड़िए।
अपनी कुर्सी के लिए जज़्बात को
मत छेड़िए।।
हममें कोई हूण कोई शक कोई
मंगोल है।
दफ़्न है जो बात अब उस बात को
मत छेड़िए।।
हैं कहां हिटलर हलाकू जार या
चंगेज़ ख़ां।
मिट गए सब क़ौम की औक़ात
को मत छेड़िए।।

एक बुढ़िया दम तोड़ती पार्टी कांग्रेस

-मनोज कुमार झा

पिछले साल आम चुनाव में कांग्रेस का पराभव सुनिश्चित है। कांग्रेस वेंटिलेटर पर है और चुनावों तक रहेगी। इसके बाद बुढ़िया कांग्रेस के 'पप्पू' नेता राहुल गांधी के हाथों ही इसका 'उद्धार' हो जाएगा। सोनिया-मनमोहन सरकार की जनता में क्या छवि रह गई है, इसे बताने की जरूरत नहीं। इस सरकार ने भ्रष्टाचार के क्षेत्र में जहां नये-नये कीर्तिमान स्थापित किये, वहीं देश के प्राकृतिक संसाधनों को गिरवी रखने और बेचने में कोई कोताही नहीं की। इस सरकार ने जिस बेरहमी से देश को लूटा, वह ब्रिटिश राज की लूट को भी मात देने वाला है। इस सरकार के कार्यकाल में पूरे देश में अराजकता का माहौल बनता चला गया जो अब अपने चरम पर है।

ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटेन के शासन के दौरान जो स्थितियां बन गई थीं, कमोबेश वैसे ही हालात हैं। विदेशी लुटेरों को लूट मचाने की पूरी छूट सरकार ने दे रखी है ताकि बदले में अपनी अय्याशियों को पूरा करने और अपना निजी खजाना भरने के लिए अपने

ही देश में मचाई जा रही लूट का एक हिस्सा मिल सके।

इधर आम जनता में त्राहि-त्राहि मची हुई है। ग़रीबी-कंगाली चरम सीमा पर पहुंच गई है। जनता बदहाल है। हर जगह गुंडों का आतंक हैं। गरीबों की औरतें अगवा की जा रही हैं और बेची जा रही हैं। दिनदहाड़े और सार्वजनिक स्थलों पर बलात्कार आम बात है। क़ानून-व्यवस्था, प्रशासन और न्यायतंत्र को लकवा मार गया है। सरकार बस एक सूत्री कार्यक्रम, लूट में लगी है। बिकाऊ व्यवस्था में जब सरकार ही दुनिया की बड़ी ताकतों के हाथों बिक चुकी है तो और क्या-क्या बिक गया, इसके बारे में कहना फिजूल है।

ऐसी बात नहीं कि यह काम इसी सरकार ने किया। इसकी शुरूआत तो तभी हो चुकी थी, जब देश को ब्रिटिश राज से तथाकथित आजादी मिली विभाजन की त्रासदी और दंगों की सौगात के साथ। भ्रष्ट शासन, रिश्वतखोरी, कालाबाज़ारी और जनता की निर्मम लूट का ढ़ांचा तो विरासत में मिला था स्वतंत्र भारत की सरकार को। अफसोस! इस ढांचे में परिवर्तन की जरूरत स्वतंत्र भारत में शासकों ने नहीं समझी। पंडित जवाहरलाल नेहरू के शासनकाल में ही भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, कमीशनखोरी, कालाबाज़ारी कम न थी। उन्होंने ही वंशानुगत शासन परंपरा की नींव डाली। इंदिरा गांधी के शासनकाल में लूट की व्यवस्था और परवान चढ़ी। आज भी देश के लाखों गांव अंधकार में डूबे हैं, लाखों किसान क़र्ज के बोझ तले दबकर आत्महत्या कर रहे हैं तो इसके लिए जिम्मेदार तो यह व्यवस्था ही है। इस व्यवस्था में दुर्दांत दस्यु मंत्रीपद की शपथ लेते हैं, वहीं अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करने वाले किसानों को फांसी की सजा दी जाती है (उसको फांसी दे दो, गोरख पांडेय की कविता)। इसी व्यवस्था में सरकारी खिचड़ी खाकर ग़रीबों के बच्चे मर रहे हैं। इसलिए, इसका दोष सिर्फ सोनिया-मनमोहन और अन्य नेताओं पर मढ़ना उचित नहीं होगा। उन्होंने तो चीज़ों को उनके अंजाम तक पहुंचाया है। 'बोए पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय।'

हम इन परिस्थितियों के लिये कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी को भी ज़िममेवार नहीं ठहरा सकते। वे नादान हैं। उन्हें आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों की समझ ही नहीं। वैसे, चाटुकार कांग्रेसी उनकी ओर आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं और वे भी अगले आम चुनाव में विरोधियों से दो-दो हाथ करने के लिए खम ठोक रहे हैं। मीडिया इसे 'पप्पू' (राहुल गांधी) बनाम 'फेंकू' (नरेन्द्र मोदी) के बीच के मुकाबले का तमाशा दिखा जहां तक हो सके मुनाफ़ा कमाने की कोशिश में लगा है।

कहा जाता है कि मनमोहन सोनिया के कठपुतले हैं, तो सोनिया किसकी कठपुतली है? साम्राजी ताकतों की। सोनिया महज प्रतीक है पतनशील, भ्रष्ट, नपुंसक व्यवस्था की जो जनविरोधी है, जो जनता के हाड़-मांस, रक्त-मज्जा पर जीवित है। सोनिया अपने-आप में कुछ नहीं। वह कांग्रेस का चेहरा है। अब सोनिया ही कांग्रेस है और कांग्रेस ही सोनिया है, पर ख़ैर ख़ुदा का कांग्रेस देश नहीं है। यह तो एक बुढिया दम तोड़ती पार्टी है। बहुत संभव है, अगले चुनाव में जनता इसकी ताबूत में आख़िरी कील ठोक दे।